परमेश्वर के वचन की एक विशेष बात, जिसे शायद तुम नहीं जानते
हो

जब तुम सुसमाचार की पुस्तकें पढ़ते हो, तो तुम देखोगे कि प्रभु यीशु मसीह का पहला उदाहरण (ग़रीष्टांत) बोने वाले का दृष्टांत था। उस उदाहरण में एक किसान खेत में बीज बोने जाता है। जब तुम आगे पढ़ते हो, तो यह स्पष्ट होता है कि बहुतों को यह दृष्टांत समझ में नहीं आया – ना केवल भीड़ को, बल्कि उसके चेलों को भी।

लेकिन जब उन्होंने प्रभु यीशु से उसका अर्थ समझाने की प्रार्थना की, तो उसने एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही:

मरकुस 4:13
“क्या तुम यह दृष्टांत नहीं समझते? फिर और सब दृष्टांतों को कैसे समझोगे?”

इस पर विचार करो:
“अगर तुम इस दृष्टांत को नहीं समझते, तो बाकी किसी दृष्टांत को कैसे समझ पाओगे?”
इसका अर्थ है – यह दृष्टांत बाकी सभी दृष्टांतों की कुंजी है। यह नींव है।

जैसे गणित में π (पाई) का नियम हर वृत्त और गोले की गणना में आवश्यक होता है, वैसे ही, यदि कोई इस दृष्टांत को नहीं समझता, तो वह यीशु के बाकी सभी दृष्टांतों को सही से नहीं समझ सकेगा।

तीन दृष्टांत – एक ही बीज की यात्रा

अब इस दृष्टांत में किसान का उद्देश्य था कि उसका हर बीज अच्छे फल लाए – कोई 30 गुणा, कोई 60, कोई 100।
लेकिन बीज को उस मंज़िल तक पहुँचने से पहले कई बाधाओं का सामना करना पड़ा।

इसलिए अब हम मरकुस 4 में आगे दिए गए दो और दृष्टांतों को पढ़ते हैं, ताकि हम आज के संदेश को और बेहतर समझ सकें:

मरकुस 4:26–29
“परमेश्वर का राज्य ऐसा है, जैसे कोई मनुष्य भूमि पर बीज
डाले, फिर रात को सोए और दिन को उठे, और वह बीज अंकुरित हो और बढ़े, यह जाने बिना कि कैसे। भूमि अपने आप फसल उगाती है — पहले पत्ता, फिर बाल, फिर पूर्ण अन्न। और जब फसल तैयार हो जाती है, तो वह तुरंत हंसिया चलाता है, क्योंकि कटाई का समय आ गया है।”

मरकुस 4:30–32
“परमेश्वर के राज्य की उपमा हम किससे दें, या किस दृष्टांत
में उसे दिखाएँ? यह उस सरसों के दाने के समान है, जो भूमि में
बोए जाने पर सारे बीजों से छोटा होता है। पर जब वह बोया जाता
है, तो उगकर सभी पौधों से बड़ा होता है और इतने बड़े डालियाँ निकालता है कि आकाश के पक्षी उसकी छाया में घोंसला बना सकते हैं।”

इन तीनों दृष्टांतों में एक ही बात है:
बीज की यात्रा — कहाँ से चला, किन हालातों से गुज़रा, और कहाँ पहुँचा।

यीशु ने पहली दृष्टांत (बोने वाले की) की व्याख्या करते हुए स्पष्ट किया कि:

लूका 8:11
“बीज परमेश्वर का वचन है।”

तो जब परमेश्वर का वचन किसी मनुष्य के हृदय में बोया जाता है, तो

उसे तीन अवस्थाओं से गुज़रना पड़ता है:

वचन की तीन अवस्थाएँ मनुष्य के जीवन में

1. विरोध और कठिनाई

सबसे पहले, वह वचन विरोध का सामना करता है। जैसे दृष्टांत में बीज कभी पत्थरों में गिरा, कभी काँटों में।
इस समय यह मनुष्य का काम है कि वह उस वचन को अपने जीवन में टिकने दे, चाहे कितना भी शत्रु उस पर हमला करे।

2. छिपा हुआ विकास

यह वह समय है जब वचन धीरे-धीरे भीतर ही भीतर बढ़ता है – और मनुष्य को इसका पता भी नहीं चलता।
यह कार्य अब परमेश्वर करता है।

3. महान फल का समय

हालाँकि बीज बहुत छोटा होता है, लेकिन एक समय पर वह इतना बड़ा हो जाता है कि बहुतों को आश्रय देता है।
ऐसा व्यक्ति फिर दूसरों के लिए आशीष का स्रोत बन जाता है – आत्मिक रूप से और भौतिक रूप से भी।

परमेश्वर के वचन की कीमत – छिपी हुई संपत्ति और मोती

प्रभु यीशु ने आगे चलकर परमेश्वर के राज्य को बहुमूल्य संपत्ति और अमूल्य मोती से तुलना की:

मत्ती 13:44–46
“स्वर्ग का राज्य उस खज़ाने के समान है जो खेत में छिपा है,
जिसे पाकर मनुष्य उसे छिपाता है, और आनन्द से भरकर जो कुछ
उसका है सब कुछ बेचकर वह खेत खरीद लेता है।”
“फिर स्वर्ग का राज्य उस व्यापारी के समान है जो उत्तम मोती ढूँढ़ रहा था। जब उसे एक अनमोल मोती मिला, तो उसने जाकर सब
कुछ बेच दिया और उसे खरीद लिया।”

इसका अर्थ है कि जो मनुष्य वचन को गंभीरता से लेता है, वह बहुत बुद्धिमान है।

वह वचन को खज़ाना मानकर उसे अपने हृदय में रखता है, उस पर मनन करता है, उसे कार्यान्वित करता है, वह अपने जीवन में हर तरह के दुख, अपमान, उपहास, अलगाव, विरोध का सामना करता है – लेकिन फिर भी वचन को गिरने नहीं देता।

बीज बाहर से छोटा, पर भीतर से शक्तिशाली

हो सकता है उसे लगे कि उसका श्रम व्यर्थ है – यह कोई पैसा नहीं लाता, कोई प्रसिद्धि नहीं देता।
लेकिन फिर भी, अंदर ही अंदर बीज बढ़ता है।

यह बीज ‘बीज से अंकुर’, ‘अंकुर से पौधा’, और ‘पौधे से फसल’ बनता
है।

और जब यह तैयार होता है, तो वही मनुष्य, जिसे कोई गिनता नहीं था, सबको चौंका देता है।
लोग पूछने लगते हैं: “इसमें इतना परिवर्तन कैसे आया?”

प्रभु यीशु का जीवन – वचन का चरम उदाहरण

यही बात प्रभु यीशु मसीह के जीवन में हुई।
बाइबल कहती है, वह तिरस्कृत और ठुकराया हुआ मनुष्य था।
लेकिन उसने बचपन से वचन को अपने जीवन में रखा।

जब समय आया, जब वचन ने फल लाना शुरू किया, दुनिया ने उसे पहचानना शुरू किया।

“क्या यह बढ़ई नहीं है?”
“उसे यह ज्ञान कहाँ से आया?”
“लोग यूनान से आकर उसे देखने की इच्छा रखते थे।”

यह है परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य, यदि वह सही से हृदय में बसाया जाए।

शत्रु भी यह जानता है – इसीलिए वो शुरुआत में ही हमला करता है

इसलिए शैतान कोशिश करता है कि शुरुआत में ही वचन को छीन ले। हो सकता है, आज तुम्हें वचन किसी ऐसे व्यक्ति से मिले जिसे तुम साधारण समझते हो, लेकिन याद रखो –
परमेश्वर का राज्य एक राई के दाने से शुरू होता है।

निष्कर्ष: आज वचन को हल्के में मत लो

यदि आज तुम परमेश्वर का वचन सुन रहे हो – उसे हल्के में मत लो।

उसे ग्रहण करो।
उस पर कार्य करो।
शैतान को इसे चुराने न दो।
मुश्किलें आएँगी – पर तुम डटे रहो।

गलातियों 6:9
“हम भले काम करने में ढीले न हों, क्योंकि यदि हम थकेंगे
नहीं, तो ठीक समय पर कटनी पाएँगे।”

आज ही निर्णय लो

मेरी आशा है कि तुम आज ही पश्चाताप करोगे और प्रभु को अपना जीवन सौंपोगे।
यही है बीज को सँभालने की शुरुआत।

परमेश्वर तुम्हें बहुत आशीष दे।

आमेन।

[illegible]

Share on:
WhatsApp

Print this post